स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

(हिंदी साप्ताहिक)

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल,
स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

www.shaharsamta.com

अंक 44 पृष्ठ 23 वर्ष 24

रविवार, इलाहाबाद, 30 मार्च 2025

R.N.I.- UPHIN/2001/3996 ISSN- 2581-6128

ईश्वर की सुंदर सी रचना ,
सुंदर कविता करती हैं।
सजल नयन से हर बातों को ,
सहती-सहती-सहती हैं।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की। चैत माह के इस विशेषांक में, हर कविता कुछ कहती है। हर कविता का कोई ना कोई हृदय स्पर्शी बातों का रहस्यांक है। इसीलिए स्त्री मन की सभी कविताएं अपनी कोमल भावों के चलते, हर मानस के गहरे मन तक बैझ जाती हैं।

देखिए यह कविता

कैसा ये अद्भुत रस छाया ।
धरती पै ऋतुराज है आ आया ।

दूसरी कविता

आए हम प्यार के नजरिए को बदलते हैं।
जहाँ तक नज़र जाए, वहाँ तक
प्यार करते हैं।

तीसरी कविता

शिशिर ने ली विदाई
झिङ्गुरन भी साथ चली गई
सड़क के आवारा कुत्तों ने
राहत की सांस लीं

चौथी कविता

साल,माह,हप्तों को गिनतियाँ समझती हैं
कंबलों की गर्मी को सर्दियाँ समझती ह

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की क्रमिकता इस बात का परिचायक है कि नारी कभी थकती नहीं कभी, हारती नहीं और कभी झुकती नहीं । सरस भावों से सराबोर महिल ा काव्य गोष्ठी विशेषांक का अवलोकन करिये और बताइए कि विशेषांक आपको कैसा ल गा, प्रतिक्रिया अवश्य दीजिए ।

अंत में

बात-बात मे बात कहूं क्या?
बातें हैं बातों का क्या?
इस सूने मन दर्पण में,
आहे हैं आहों का क्या !

कविताएं

हरियाली

चहुं ओर फैली हरियाली
क्रीड़ा करती कोमल डाली
कौतुहल विस्मय प्रस्फुटित
आँगन महकी है फुलवारी

रंग बिरंगी खिली अधखुली
सुन्दरता की छवि विभावरी
मंद-मंद चले हवा औ झौंके
स्वर लहरी शीतल निर्झरी

ऋतुराज आया सजी टहनी
धरा ने अद्भुत चुनरी पहनी
इङ्गलाती और बलखाती ये
अनुपम उद्धित तरुण मंजरी

भर दो ज्ञान वीणा वादिनी
आशीष दो हे प्रदायिनी
कंङ्ग सबके भरो मधुरता
निर्मल भाव जीवन दायिनी

अवंतिका विशाल'अवि'

अद्भुत रस

कैसा ये अद्भुत रस छाया ।
धरती पै ऋतुराज है अ आया ।

अमवा की डाली पर देखो।
काली कोयल कूक रही है।
कुहू कुहू करके कानों में
मीङ्गी मिश्री घोल रही है।
देखो अमवा भी बौराया
धरती .....

खुशबू की गङ्गरी को बाँधे ।
मौसम महक महक कहता है।
खुशियों को भर लो आँचल में
भँवरे क्यों उदास होता है।
खुशबू से मधुबन मुस्काया
धरती.....

पीली पीली सरसों फूली

महुआ की डाली भी झूली
हरी दूब का बिछा बिछौना खेतों की पगडंडी झूली।
खुशियों से मौसम मुस्काया
धरती.....

प्रवीणा त्रिवेदी प्रज्ञा

ग़ज़ल

डूबने का लगा मुझे डर है
तेरी आँखों में इक समंदर है

बाद मरने के हाथ ख़ाली हैं
ज़ीस्त का चाहे तू सिकन्दर है

मैं यूँ निश्चिंत होके रहती हूँ
मेरे सर पर ख़ुदा की चादर है

याद रखना न भूल जाना तू
रब की खुश्बू से तू मुअत्तर है

हम मुखौटे लगाए फिरते नहीं
जो है बाहर हमारे भीतर है

मेरी तुझ तक सदा नहीं जाती
हो गया तेरा दिल भी पत्थर है

अब बचाऊँ वज़ूद 'अनु' कैसे
दिख रहा हर तरफ़ ही अजगर है

अनीता सिंह 'अनु'

बेटी चुप चुप रोती है?

होता क्यों है बहुधा ऐसा,
बेटी चुप चुप रोती है ?
भाई नज़रें फेर रहा क्यों,
सोच दुखी वह होती है?
पिता के अरमानों का सूर्य,
दिन में क्यों ढल जाता है?
एक अंधेरे कोने में फिर,
बिस्तर क्यों डल जाता है?

शशि बाला किरन

मधुमास...

लो! आ गया मधुमास,
छा गया मधुमास ।
कुछ ऐसी छाई फिजा में खुमारी,
हवा भी जैसे गुनगुनाने लगी है।
खिल उड़ा फूल- फूल,

कलियां भी मुस्कुराने लगी है।
मस्त- मस्त घूमे भंवरे ,
तितलियां भी खिलखिलाने लगी है , पीली- पीली चुनर ओढ़े सरसों रानी
खेतों में खलिहानों में बलखाने लगी है
और कुछ ऐसी ली
मौसम ने अंगड़ाई
कि तस्वीर भी उनकी बतियाने लगी हैं
जाने !
क्या हो गया है आजकल!
लबों पर गीत- गजल ,
रूबाई छाने लगी है
पिया संग खेलूंगी ,
अबकी होली
सोच - सोच !
नई- नवेली नार मुस्काने लगी है ।
लो ! आ गया मधुमास
छा गया मधुमास ...।

सुमन चौधरी 'सुमन'

बासन्ती गीतिका

कर रही है यह धरा श्रृंगार फिर से।
छिड़ गए खंडित हृदय के
तार फिर से।।

झड़ चुके पत्ते नये फिर हो रहे हैं,
आ गया ऋतुराज भी
इस बार फिर से।।

मान ली गलती उन्होंने फिर स्वयं की,
कर लिया हमने उन्हें स्वीकार फिर से।।

हार जाने से बहुत बेचैन थे वो,
जीत हम ने मान ली है हार फिर से।।

जो अधूरे रह गए थे स्वप्न सुंदर ,
अब चलो कर लें उन्हें
साकार फिर से।।

क्या करेंगे? सोच कर हैरान हैं यह,
फँस न जाएं हम कहीं
मझधार फिर से।।

कर रहे मनुहार तुमसे सर झुकाकर,
थाम लेना हे प्रभो! पतवार फिर से।।

ऋतुबाला रस्तोगी

स्वागत है ऋतुराज

स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा,
स्वागत है ऋतुराज बसंत।
पलक पांवड़े बिछे हुए हैं,
पुलकित हो गए दिशा दिगंत।

कली कली झूमे मुस्काए,
कोयल वंदन गीत सुनाए।
झरे पराग धरा पर झर झर,
रंग बासंती छटा दिखाएं।
गुनगुन भंवरे घूम रहे हैं,
और फसल हुई रसवंत।
स्वागत है ऋतुराज बसंत।।

राह पथिक के नैनन भाई ,
सरसों पीली जब लहराई।
काम के बाण चले संघाती,
आम्र मंजरी भी बौराई ।
बिरहन का जो जिया जले तो,
पूछे कहां छुपे मोरे कंत।
स्वागत है ऋतुराज बसंत ।।

कोमल पल्लव नयन
खोलकर कलियों संग बतियाते हैं।
चंद्रकिरण संग देवदूत अब
प्रेम सुधा बरसाते हैं।
क्यारी क्यारी केसरिया ध्वज,
मदन बिखरे रूप अनंत ।
स्वागत है ऋतुराज बसंत।

डॉक्टर पूनम चौहान
धामपुर बिजनौर उत्तर प्रदेश

मानव मन

मानव मन को बंजर करता,
कण-कण हो रोज बिखरता ।
जीवन को जीने की खातिर ,
जाने कितनी बार ही मरता ।
कैसे ,क्यों किरदार है बदले ,
जाने कैसे- कैसे है संवरता ।
छूटे सब यही ये काया- माया,
फिर भी काहे इतना भरता ।
सब पर मृग तृष्णा भारी है,
क्यों ना मन को रीता रखता।
संबंधों के खारे सागर में ,
डूब - डूब वैरी मन तैरा करता।

अर्चना चौहान
किरतपुर बिजनौर

बसंत ऋतु

बसंत आगमन से धरा,
चैतन्मय हो उड़ती
प्रकृति कुसुम-कलिकांओ से
धरा भी महक उड़ती।
मानुष के रग-रग में उल्लास
नवस्फूर्ति बसंत भर देती।

धरा ने ओढ़ी धानी चूनर,
कोयलिया छेड़े कुहू-कुहू तान
भंवरे गुन गुंजन गाते गान।

दरख्त पल्लवित हो रहे,
खेतों मैं फैली हरियाली
हृदय को बहुत लुभाए,
रंग बिरंगे सतरंगी फूल
खुश्बू भीनी है फैलाए।

आम के पेड़ो पर आने लगे बौर
और खिले सरसों के पीले फूल,
झींगुर भी करतें हैं शोर ।
धरा पे छाई ताजी हरियाली
और डोले पेड़ों की डाली डाली!

सर-सर बहती मलयज पवन
खिल गए धरती और चमन,
शिशिर ऋतु विदा हुआ ।
आया उत्साह भरा बसंत मौसम।
दिव्य ज्ञान आलोक का तप और
त्याग का गुलाबी बसंत मौसम !!

सुषमा सिंह 'उर्मि,

माँ शारदे

हे मां शारदे, जन्मदिवस है तुम्हारा,
छाया रंग बसंती,
चारों तरफ हरियाली छाई,
हे मां शारदे आपको
जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई
अज्ञानता के तिमिर को हटाकर
प्रकाश में ले जाने वाली मां तुम विद्या की देवी कहलाई।
आपको आपके जन्मदिन की

बहुत बहुत बधाई।
ब्रह्मा जी ने जब सृष्टि रचाई, देखा उन्होंने पृथ्वी पर खामोशी सी छाई,किया अवतरित आपको,
तब से ब्रह्म पुत्री कहलाई,
हे मां शारदे आपको
जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई
एक हस्त वर मुद्रा में, एक में कमल, और एक में वीणा,
एक हस्त माला सुशोभित
हे हंस वाहिनी, हे ज्ञान दायिनी,
आपकी इस छवि पर वारी जाऊं
करके श्रद्धा के पुष्प अर्पित
मैं मन ही मन मुग्धाई,
हे मां शारदे आपको
आपके जन्म दिवस पर
बहुत-बहुत बधाई ।

पुष्पा सिंह

प्रार्थना

हे ज्योति किरन, दो संजीवन,
शशि का दर्शन कर पाऊँ।
भर प्रीति नयन को दो नन्दन,
मैं मधु रस पी मुस्काउँ।।
दो जीत भरा अभिनव जीवन,
जग मे यश सुन्दर पाऊँ।
हे दयामयी कल कीर्ति करो,
बस तेरी नजर में आऊँ।।
होकर विनीत करती वन्दन,
आगमन करो गुहराऊँ।
अभिभूत हुई अभिनन्दन से,
अधरानन में लहराऊँ।।
संभूत करो खुद हो चन्दन,
मैं तुझको तिलक लगाऊँ ।
अद्भुत अर्चन मैं आज करूँ,
वर दो सबको महकाऊँ।।
स्वर दे सुंदर सुघर-सुघर दे,
हे वाणी मेरा घर भर दे।
कल्याणी अंतर तर कर दे,
वीणा का अमृत मधु स्वर दे।।
पीड़ा का झंकृत नृत-सर दे,
ज्योतित होती नित निर्झर देत्त
गगन में प्रिय वह पर दे,
रहूँ मगन मैं माँ स्तर दे।।

कवियों में हो कमल हुकर दे,
रवि से भी हो प्रबल प्रखर दे।

तेजोमय तृण-तृण कर स्वर दे,
ओजमयी ओजस्वित हर दे।

परमेश्वर से देव प्रवर दे,
सर्जन करे जो जगदीश्वर दे।
सदा उमड़ते सागर भर दे,
सुधा बरसते जीवन धर दे।।

मधुरिम शाम मधुर मधु कर दे,
ऊषाकाल विविध सुधिफर दे।
हो सुबुद्ध वह सजग प्रहर दे,
भाव-भँवर मय मृदुल लहर दे।।

काट-काट तम का बंधन माँ,
तन-मन में विश्वास भरो।
छांट कुहासा पूर्व दिशा का,
ऊँचा सा इतिहास करो ।।

पूनम पांडे

हे भवानी

हे भवानी महाशक्ति की स्वामिनी।
ज्ञान दे दो हमें ज्ञान की दायिनी।।

भक्त को मात तेरा सदा आसरा।
संकटों को करो दूर माँ तो जरा।।
हो कृपा आपकी मुस्कुराती रहूँ।
आपको यूँ सदा मैं मनाती रहूँ।।

हाथ माता रखो शीश पे सर्वदा।
दूर होती रहेगी सभी आपदा।।
विघ्न टाले यहाँ तू सभी शारदे।
पाप जो भी करे माँ उसे तार दे।।

भक्ति से ही मिले शक्ति सारी यहाँ।
माँ जपे आपका मंत्र सारा जहाँ।।
चाहिए ना मुझे तख्त औ ताज माँ।
ज्ञान भंडार मेरे भरो आज माँ ।।

श्रद्धा श्रीवास्तव

लहरों में नाव सी ये

लहरों में नाव सी ये, निम्बिया की छांव सी ये।
हरे भरे गांव सी ये ,होती बहुरानियां।

सरदी की धूप सी ये,ममता स्वरूप सी ये।
प्रेम वाले मोती नित, बोती बहुरानियाँ।

भोर को प्रणाम करे,सारा दिन काम करे।
सबको सुलाके फिर,सोती बहुरानियाँ।।

कुल को बढ़ाती हैं ये,सब अपनाती हैं ये।
फिर भी न जाने क्यूं ये, रोती बहुरानियाँ।।

घर पे जो आंच आए,गम के जो घन छाए।
बन बिजली सी कौंध , जाती बहुरानियाँ ।।

खुद को भुला के जीती, आंसू भी सहज पीती।
सभी को खिलाने बाद,खाती बहुरानियाँ।।

पीहर को छोड़ कर, नए नाते जोड़ कर।
प्रीत का खजाना संग ,लाती बहुरानियाँ।।

द्वार की रंगोली सी है,रंगों भरी होली सी है।
इसी लिए सब को ही, भाती बहुरानियाँ।।

शिप्रा सिंह

गीत बसंती गाएँगे

हवा चले मद्धम मनुहारी, प्रेम ध्वजा फहराएँगे ।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

ठूंड कड़ाके की अब बीती, छटा सुहानी छायी।
सुप्त पेड़ पौधे सब जागे, लावण्या मन को भायी।।
मानव पशु आह्लादित होते, दुःख दर्द बिसराएँगे।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

सजी मंजरी अमराई में, सुरभित उपवन होता।
जप तप पूजन करते प्राणी, हृदय दिव्यता में खोता।।
लदे बाग फूलों से सारे, भँवरे देखो मँडराएँगे।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

चिड़ियाँ चहकें कोयल कूके, कानों में मधु सा घोले।
कण-कण हर्षित हो धरती का,सुखदायी बातें बोले।।
पर्वों का मौसम है आया, खुशियाँ खूब मनाएँगे।
पीली पीली सरसों फूली, गीत बसंती गाएँगे।।

सीमा वर्णिका

रंगो का विस्तार

नित बसंत नवरस छलके है ,रंगो का विस्तार।
कुसमित उपवन प्रतिपल सुंदर,
अनुपम यह उपहार।।

भूल गई मैं अपने को अब,
रहा नहीं कुछ याद।

मंदिर मंदिर पूजन करती ,दूर करो अवसाद।।
सच्ची राहों पर चलने से, पग- पग मिलता प्यार।
कुसुमित उपवन प्रतिपल सुंदर,
अनुपम यह उपहार।।

खिलती कलियाँ बागों में अब,
मधुवन सुंदर गीत।
मुदित हृदय नाचे पलपल उर,
सजल नयन से प्रीत।।
संग रहे अपना मनभावन,
प्रतिपल खुशियाँ द्वार।
कुसमित उपवन प्रतिपल सुंदर,
अनुपम यह उपहार।।

ऋतु बसंत में बहती मधुमय, शीतल मंद समीर।
बागों में कलियाँ खिलती है,चंचल हुआ कबीर।।
पीत रंग से स्वागत करती, वसुधा लेकर हार।
कुसुमित उपवन प्रतिपल सुंदर,
अनुपम यह उपहार।।

उमा मिश्रा प्रीति

ऋतु बसन्त में शारद माता

ऋतु बसन्त में शारद माता, देती हैं वर दान ।
विद्या वारिधि ज्ञान दायिनी, करती नित कल्याण।।

वीणावादिनी सुर ज्ञान दे , सीखें नूतन राग ।
सुरवन्दित हो सीखें सरगम , जागे मेरे भाग ।।

ज्ञान मार्ग के पथिक बनें हम , देना माता ज्ञान ।
शब्द भाव में ज्ञान भरो माँ, पायें जग में मान ।।

माँ की महिमा हमने जानी, अन्तस कर लो वास।
विज्ञ बना दो कृपा करो माँ , रहो हमारे पास ।।

डॉ कुमकुम शुक्ला

ताल-छंद नव,

नव गति, नव लय,
ताल-छंद नव,
भारत में भर दे,
हे वीणा-वादिनी वर दे!

बसंत-पंचमी, सरस्वती-पूजा,
निराला-जयंती की,
हार्दिक-शुभकामनाएँ...

यह बसंत-पंचमी,

आप सभी के जीवन को,
प्रेम, स्नेह एवं प्रसन्नता के,
मनमोहक बसंत से भर दे...

अनीता दुबे

वर दे हो नव सृजन

हम हैं माँ अति कृपन। वर दे हो नव सृजन।
अधरों से कर भजन। करती पूजन मगन।।
मन लागी अति लगन। कह पाऊँ नव कथन।
शुभ हो चिंतन मनन। सब पूरे कर सपन।।

शुभ तेरे तन वसन। कर वीणा सुर वदन।
छवि मोहे सह जगत। तुम वाणी हम भगत।।
ममता मूरत सुखद। वर देतीं अभयपद।
कुमुदी आसन अमर। भर प्रज्ञा उर सगर।।

भजते माँ हर पहर। ठहरे आ तप डगर।
विनती शारद वरद। हर अज्ञान हिमनद।।
दिन है ये शुभ करण। करते हैं अनुकरण।
अनुगामी बन गमन। तुमको अर्पण मगन।।

अनुराधा गर्ग दीप्ति

मां सरस्वती

स्वर की देवी सरस्वती से
प्रार्थना हम कर रहे।
ज्ञान विद्यादायनी की
वंदना हम कर रहे।
विश्व की नित नवल रचना
हेतु आगे बढ़ रहे।
बुद्धि की देवी सरस्वती से
विनय हम कर रहे।
सरस राग और रागिनी से
साज सुंदर नित सजे हों।
सुमित स्वर नित नवल प्यारे
हर्ष से सब मन मगन हों।
संगीतमय आशीष पाकर
धन्य हम सब हो रहे।
स्वर की देवी सरस्वती की
वंदना हम कर रहे।
मधुर स्वर शुभ भावना की
देवी को मेरा नमन है।
शुभ्र बसना वीणवादिनी
भारत मां को नमन है।
श्रद्धापूरित हृदय से
आराधना हम कर रहे।
स्वर की देवी सरस्वती की

शहर समता

वंदना हम कर रहे।
नित नई संकल्पता से
सृष्टि सुंदरतम बने।
ज्ञान और विज्ञान की
गंगा से पावन जग बने।
वीणवादिनी विमल वर दो
कामना हम कर रहे।
स्वर की देवी सरस्वती की
वंदना हम कर रहे।

रचना सक्सेना
जबलपुर

चलें महाकुंभ का मेला

चलो साथियों, चलें प्रयाग महाकुम्भ मेला।
देखें भारत की श्रद्धालु भीड़ का अपूर्व रेला।।

पावन गंगा के निर्मल जल में करेंगे स्नान।
संक्रांति के शुभ पर्व पर करेंगे पुण्य दान।।

बारह वर्षों में लगता है यह आस्था कुम्भ।
पौष शुक्ल पक्ष पूर्णिमा से हो रहा प्रारंभ।।

कुम्भ हमारी आस्था -विश्वास का प्रतीक।
सनातन धर्म जप-तप आराधना स्वरूप।।

कुम्भ सनातन धार्मिक परंपरा का उत्सव।
कुम्भ आध्यात्मिक चेतना का है महोत्सव।।

भारत के कोने-कोने से आते हैं यहाँ लोग।
करते गंगा स्नान,जप-तप,ध्यान और योग।

नागा- साधु का जुलूस मेला बनाए रोचक।
साधु- संतों के प्रवचन से होगी खूब रौनक।।

महाकुंभ धर्म,आस्था ,विश्वास का है संगम।
प्रयाग में गंगा यमुना सरस्वती का है संगम।।

त्रिवेणी के संगम में स्नान कर पुण्य कमाए।
महाकुंभ के उत्सव का हार्दिक आनंद उठाएं।

आशा जाकड़,
इन्दौर (मध्य प्रदेश)

मंजिल तक

मंजिल तय हो जाती है
पुत्र के जन्मते ही
युगों से चली आ रही
परम्परा दायित्वों की

उसे निभाने की
जनक-जननी की
महत्वाकांक्षा की दौड़ में
प्रतियोगिता की होड़ में
आरम्भ होता बचपन
बाल-सुलभ नटखटपन
को कर दरकिनार
मंजिल-प्राप्ति में होम होती
शैशवावस्था, किशोरावस्था
किसी ने न पूछा उसकी
दिली तमन्ना,
चाहतों की मंजिल
सुबकता रहा अंतर्मन
देखता रहा ख़्वाबों को टूटते हुए
शुष्क आँखें, गीला मन
तर्क नहीं
तय थी मंजिल, राह अलग
अनवरत भागते-भागते
थकित तन-मन
अंततोगत्वा सम्पूर्ण आत्मा
प्रस्थान कर गया
सदा के लिये क्षमा माँग
या लेने पुनर्जन्म
अपनी सपनों की मंजिल तय करने।

अनीता पंडा

प्यार का नजरिया

आए हम प्यार के नजरिए को बदलते हैं।
जहाँ तक नज़र जाए, वहाँ तक
प्यार करते हैं।
आओ प्यार की परिभाषा
बदलकर दुनिया को गले लगाते हैं।
अपनों को गले लगाना तो आसान है,
गैरों को गले लगाकर प्यार के
दायरे को बढ़ाते हैं।
जहाँ न कोई जाति-धर्म हो,
न कोई ज़मीन में लकीर हो,
आओ हम सब मिलकर प्यार
के नजरिए को बदलते हैं।

प्यार को अपनी आँखों में इतने भरें,
कि नफरत का
एक बूंद भी न बचे कहीं पर।
आओ हम सब मिलकर
प्यार की परिभाषा बदलें।
दुनिया में सभी को प्यार से जीना सिखाएँ।

आओ सब मिलकर ऐसा दुनिया का निर्माण करें।
जहाँ बलात्कारी न हो,
लालच न हो,
भ्रूण हत्यारे न हो,
जहाँ वृद्धाश्रम न हो,
माँ-बाप अपने बच्चों पर बोझ न हो।
जहाँ मनुष्यों के साथ-साथ
पेड़-पौधे, पशु-पक्षियों के लिए
पर्याप्त जगह हो।
आओ हम सब मिलकर
प्यार के नजरिए को बदलें।
जहाँ चारों ओर, बिना कोई
अपेक्षा का प्यार ही प्यार हो।

मल्लिका डे विष्णु

ऐसी उम्मीद क्यों करते हैं

अन्याय और जुल्म वो करते हैं,
न्याय की उम्मीद हमसे रखते हैं।

बिना सोचे लोगों को बेइज़्ज़त वो करते हैं,
इज्जत उनका सभी करें ऐसी सोच वो रखते हैं।

भेद-भाव लोगो में वो करते हैं,
अपने लिए समानता की अपेक्षा वो करते हैं।

लोगो की ज़िंदगी में नफ़रत वो भरते हैं,
अपने जीवन में प्यार के
रंग की चाहत वो करते है।

कड़वाहट जुबान पे सदा उनकी रहती है,
औरों से मिझास की उम्मीद उनकी होती है।

नफ़रत की आग में सबको वो जलाते है,
प्यार की शीतलता उन्हें मिले ऐसा वो चाहते है।

लोगो के जीवन में अशांति वो फैलाते है,
उनके जीवन में
शांति ही शांति हो ऐसी सोच वो रखते है।

औरों का हक तो खुशी-खुशी छीन लेते है,
खुद पर आए तो हक की माँग करते है।

आजकल लोग मतलब के खातिर
हर हद पार कर जाते है,
सही ग़लत में फर्क करना भी

इंसान भूल जाते है।

अनुपमा प्रधान

आज़ादी क्या है दोस्तो

आज़ादी क्या है दोस्तो तुम समझो इसका सार,
द्वेष भाव छोड कर लो सबसे मिलकर प्यार।
ले लो कसम तुम दोस्तो देश के अपनी ,
उन्नत इसे बनाएंगे हम होकर ज़िम्मेदार ।
महफूज़ रहे बेटियां शिकारियों के जाल से,
चलकर साथ साथ मिलकर कर दो उनपर वार।
नशे की बुरी आदतों से नयी पीढ़ी को बचाओ,
वर्ना देश गुलिसतान अपना बनेगा मज़ार।
सपना जो हमने देखा था एकता का देश हो
जातियों के भेद से टुकडों में बंटा हज़ार।
कोशिश करो ऐ दोस्तो सच को लो पहचान,
झूङ्ग और फरेब को यहां झड से दो उखार।
कोख में मरे न बेटी ऐसा ज्ञान फैलाओ
बेटी बढ़कर बेटे से ,करना एतबार।
मफाद परस्त लोगों से देश को बचाओ,
एक जुट होकर कर दो उनका बहिष्कार ।
गोजा कहे यह दोस्तों से सुन लो मेरी बात
प्यार का तिरंगा आज लहराओ बार बार।

सुनीता भट्ट गोजा।
जम्मू-कश्मीर (जम्मू)

उपहार

नई पीढ़ी नई सोच,
दिवस प्यार के मना रहे,
देकर टैडी, चॉकलेट, गुलाब,
प्रेम की परिभाषा बता रहे।

उपहारों की लगी होड़ है,
सब है बांटे जा रहे,
कार्डों और संदेशों से सब,
अपना प्यार जता रहे।

नहीं जानते हैं बेचारे,
प्रेम की कोई परिभाषा नहीं,
सच्चा प्रेम जो हो जाए तो,
उपहारों की अभिलाषा नहीं।

प्रेम न किसी कार्ड, गुलाब,
उपहार का मोहताज है,
समर्पण ही प्रेम की भाषा,
जो कल थी वही आज है।

उपहार ही देना है तो, परवाह,
सामंजस्य का तुम दो,
अपने प्रेम और समर्पण से,
मीत का जीवन खुशियों से भर दो।

नीता शर्मा

सड़क के कुत्ते

शिशिर ने ली विदाई
झिङ्गुरन भी साथ चली गई
सड़क के आवारा कुत्तों ने
राहत की सांस लीं
मुंह और दुम अलग हुई।
कुत्तों ने अपनी-अपनी दुम निकाली
अपनी-अपनी जगह पर लम्बी अंगड़ाई ली,
ब्रह्मंड में सिकुड़ी नसें, पेशियां फ़ैल गईं
वे चुस्त हो गए
कूद- फांद करने लगें।
तभी पछुआ पवन को शरारत सूझी और
जोर का झोंका बन बार बार छेड़ने लगा
उनको परेशान देख कर वातानुकूलित गाड़ी से
एक रईस कुत्ता ने जाते-जाते कहा 'बेचारे'!
सुनकर एक आवारा ने
गाड़ी की तरफ मुंह किया
'भौं-भौं'! चुप रहो।
तुम कौन होते हो हमें बेचारे कहने वाले?
तुम क्या जानो जिंदगी जीना किसे कहते हैं!
हम तुम्हारी तरह एक ढर्रे का जीवन नहीं जीते।
हमारे पास छह ऋतुओं के साथ जीने का अनुभव है, प्रकृति ने सिखाया है,
ग्रीष्म में चिलचिलाती धूप दहाती है तो
कहीं न कहीं छांव भी मिल जाती है,
वर्षा में भीगकर वदन को झाड़ते, सुखाते
सप्त रंगी इंद्रधनुष और सद्यस्नाता प्रकृति की
सुंदरता नैन को बड़ा सुख देती हैं,
पतझड़ परिवर्तन का संदेश देता है,
शिशिर सहनशीलता सिखाता है
टपकते ओस के बिंदु जीने की प्रेरणा देते हैं
और कहते हैं, 'वसंत को भी आना ही है'।
ऐ आलीशान महल में रहनेवालों!
हमें बेचारे कहना तो सिर्फ
ढकोसला है
बेचारे तो तुम हो
कुछ कर नहीं सकते
किसी के लिए अपनी मर्जी से,
अपने लिए भी नहीं
लेकिन हमें देखो हम

अपनी मर्जी से मस्ती में जीते हैं ।

गीता लिम्बू
शिलांग 6

मंजिले और भी हैं

मंजिले और भी हैं
गर्दिश में बेशक तारे हैं,
कोई न तेरे सहारे हैं,
हिम्मत न तू हार,
मंजिलें और भी हैं ।
मुरझाए फूलों को देख,
दिल तेरा डूब रहा है ।
उझाके आँख तो देख,
दूर गुलशन महक रहा है।
बागबां की है पुकार,
मंजिले और भी हैं।
ग़र आज ग़म की रात है,
कल सवेरा भी होगा ।
तन्हा है ग़र आज तू ,
कल बसेरा भी होगा।
मत मान जीवन को भार,
मंजिले और भी हैं ।।
एक आशा के बुझ जाने से,
क्यों निराश हो रहा है।
हक़ीक़त मे जहाँ तेरे मे
कुछ खास हो रहा है ।
मुश्किल को कर ले पार,
मंजिले और भी हैं ।।

दया शर्मा
शिलांग (मेघालय)

मायके की प्यारी डगर

मायके की यह प्यारी डगर
कैसे जाऊं इसे छोड़कर,
बिन मेरे एक पल ना जो
रहती दिल का टुकड़ा मुझे थी जो कहती।
थपकियों से मुझे जो सुलाती
चेहरे से ही जो दिल भांप जाती।
जाने कितनी करेगी
फिकर कैसे जाऊं इसे छोड़कर,
मायके की यह प्यारी डगर
कैसे जाऊं इसे छोड़कर।।

पापा मुझको बड़ा याद आते,
कितनी अच्छी वो बातें सिखाते,
खेल में कहीं जो मैं छुप जाती,

पल में ही वह मुझे ढूंढ लाते,
अब ना आऊंगी उनको नजर
कैसे जाऊं इसे छोड़कर
मायके की यह प्यारी डगर
कैसे जाऊं इसे छोड़कर।।

है संजोई सुनहरी जो यादें,
जो भुलाए नहीं भूलती है,
भाई बहनों की वह प्यारी बातें,
रोज मेरा पता पूछती हैं,
कैसे खुशियों भरी हो डगर
कैसे जाऊं इसे छोड़कर
मायके की यह प्यारी डगर
कैसे जाऊं इसे छोड़कर।।

भैया वादा करो आज मुझसे,
मायके में बुलाओगे मुझको,
होगी जब भी परेशान तुम यूं,
तो मुझे साथ पाओगे हरदम,
होकर आतुर तुम राह देखना,
फिर आऊं जब भी मैं घर लौट कर,
मायके की यह प्यारी डगर
कैसे जाऊं इसे छोड़कर।।

विद्या मिश्रा
शिलोंग, मेघालय

भजन शिवमई

मन में बसाकर शिव को
मैं भक्ति में खो जाऊं
दिखे मां गोरा बस मुझको
और शिव की महिमा गाऊं
मैं शिवमई हो जाऊं -4

गंगा जी से लेकर जल
मै शिवलिंग पर चढ़ाऊं
गर हो जाए कोई गलती
मैं शिव गोरा को मनाऊं
पीकर भक्ति का प्याला
मैं शिवमई हो जाऊं-4

मेरे भोले बाबा ऐसे
दुजा ना इनके जैसे
बस जल से प्रसन्न हो जाते
जो भक्ति भाव से जाते
मेरे शिव भोले भंडारी

इनकी क्या-क्या महिमा गाऊं
बिन मांगे सब कुछ देते
पल में दुख ये हर लेते
डम डम बाजे डमरू
जहां नंदी रहते हर पल
मृगेश मयूरा संग संग
मूषक सर्पों की हलचल
दिन रात मैं इनको ध्याऊं
दिन रात मैं इनको ध्याऊं
मैं शिव की महिमा गाऊं
मैं शिवमई हो जाऊं-4

रीना प्रदीप कुमार

ग़ज़ल

साल,माह,हप्तों को गिनतियाँ समझती हैं
कंबलों की गर्मी को सर्दियाँ समझती हैं

ये जवाँ नही समझे जोश है जवानी का
उम्र के तजुर्बो को झुर्रियाँ समझती है

ख़्वाहिशे रही दिल में मंजिलें मिले मुझको
ये थकान पैरों की दूरियाँ समझती है

भूलकर गिले शिकवे खुशियाँ लुटाऐं हम
नफ़रतो के ज़ख्मों को सिसकियाँ समझती है

किस तरह मिली मंजिल कौन इसे समझेगा
रात दिन जगी रचना' पुतलियाँ समझती है

रचना सक्सेना
प्रयागराज

ग़ज़ल

बिगड़ने मनाने के दिन आ रहे हैं
नये राग गाने के दिन आ रहे हैं

जिगर आज़माने के दिन आ रहे हैं
कहीं दिल लगाने के दिन आ रहे हैं

असर मेरी रातों पे तेरा हुआ है
कि सपने सजाने के दिन आ रहे हैं

तुझे रोज़ मिलने की चाहत में अब तो
बहाने बनाने के दिन आ रहे हैं

ये खूशबू महकती हवा पीली सरसों
कि नग़में सुनाने के दिन आ रहे हैं

बदलती फ़ज़ा रंग भरने लगी है
चलो फ़ाग गाने के दिन आ रहे हैं

मशक़्क़त भरी दोपहर है 'सुमन' फिर
पसीना बहाने के दिन आ रहे हैं

संगीता श्रीवास्तव 'सुमन'
प्रयागराज उप्र

शहर

ये शहर रात भर जागता है
न जाने क्या तलाशता है?
दिन के उजाले से
अँधेरी रातों में
जाने कौन ख्वाहिश
लिए आंखो में
दिन रात इधर उधर भागता है
ये ....
औरों को छोड़ सबको
अपनी पड़ी है
मानव सभ्यता किस
दो राहें पर खड़ी है
इन्सान हो इन्सानियत से हारता है
ये.....
सबसे आगे जाने
की होड़ में
जिन्दगी की हर
दौड़ में
जीतने में अपना सुख चैन हारता है
ये.....
न सोने का समय
खाने का न वक्त है
हर काम बस
बे वक्त हैं
कभी दिन में सोता रात जागता है
ये.....
घर में नहीं खुशियाँ
बाहर ढूढता है
बड़ी खुशियों के खातिर
छोटी वजह भूलता है
एक के बाद एक नई लालसा है
ये शहर रात भर जागता है।।

मिली संजय श्रीवास्तव

प्रेरणा

हे बालक अपनी परेशानियों

से ना घबराना
स्थिर मन से अच्छे प्राणियों से
प्रेरित हो जाना
एक सफल व्यक्तित्व बन जाना
एक सफल व्यक्ति कहलाना
कङ्गिन लगे डगर तो भी ना
घबराना
मेहनत करने से ना करना कोई
भी बहाना
जीवन की परीक्षाओं में सफल
हो जाना
संसार से जाने के बाद भी अपनी
अच्छी यादों से याद आना
एक अच्छा मनुष्य कहलाना
एक अच्छा समाज बसा जाना

श्रीमती मोहिनी कुमारी

होली के रंग में रंग दो मोहे

फागुनी बायार देखि राधा संग खेल रहैं,
उड़त अबीर रंग----- श्याम बरसा गयो,
सतरंग भीग गए---- भीग गए तन मन,
लाल लाल बादल है- आज हरषा गयो।

खेलत है ग्वाल-बाल खेलत है सखियां,
राधा खेले श्याम संग मन मुस्काए गयो,
प्रेम पिचकारी डारैं--- रंग त्यौहार गया,
टोली सबे रंग गई-- खुशी अपार भयो।

ढोल संग मजीरा भी छम छम बाज रहा,
झूम झूम नाच रहे- मन को लुभाए गयो।
लाल पीला हरा रंग श्याम भरैं पिचकारी,
रंगडार राधिका की- अंगिया भिगो गयो।

गोकुल के घर-घर--- रंग सबै धोल रहैं,
आंगन और बगिया उल्लास छाय गयो।
भीग गई नवरंग- सखियां सहेलियां भी,
ब्रज में उड़ा गुलाल--- धूम मचाए गयो।

लठ्ठमार हुड़दंग----- बरसाने खेलैं सब,
रंग डाल लाल भाये-बांसुरी बजा गयो।
भाई चारा बढ़ रहा--- दूर भये राग द्वेष,
फाग खेलैं रंग डार-- प्रेम खुमार भयो।।

मंजू लता नागेश
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

सांसो की रेल गाडी चाँद के गॉव

कुदरत गाती है
मोहब्बत के नगमे
नदियाँ खिलखिलाती हुई
अनन्त की ओर

आसमान पर रची
दिलकश पेंटिग
संग संग फूलो ने बाढ़ दी
हवा के आँचल में
खुशबु के रुमाल की गाँङ्ग

खेलते है मौसम हर बरस
पकड़म पकड़ाई
दस्खत कर देते है बदलाव के
चुपके से आता है एक मौसम

राजा ऋतुओ का
गुनगुनाते है हम
तब लताये शर्माती है
झूमते है दरख्त

मुस्कराती है बहारे
जिंदगी इस मौसम की तरह
खुशगवार रहे हरदम
दोहराने होंगे सकारात्मकता के मन्त्र

यदि हो पाया ऐसा
फर्राटे भरेगी सासो की रेलगादी
पहुचेगी चाँद के
खूबसूरत गॉव तलक।

हेमा पांडे

शहर समता

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।